# पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

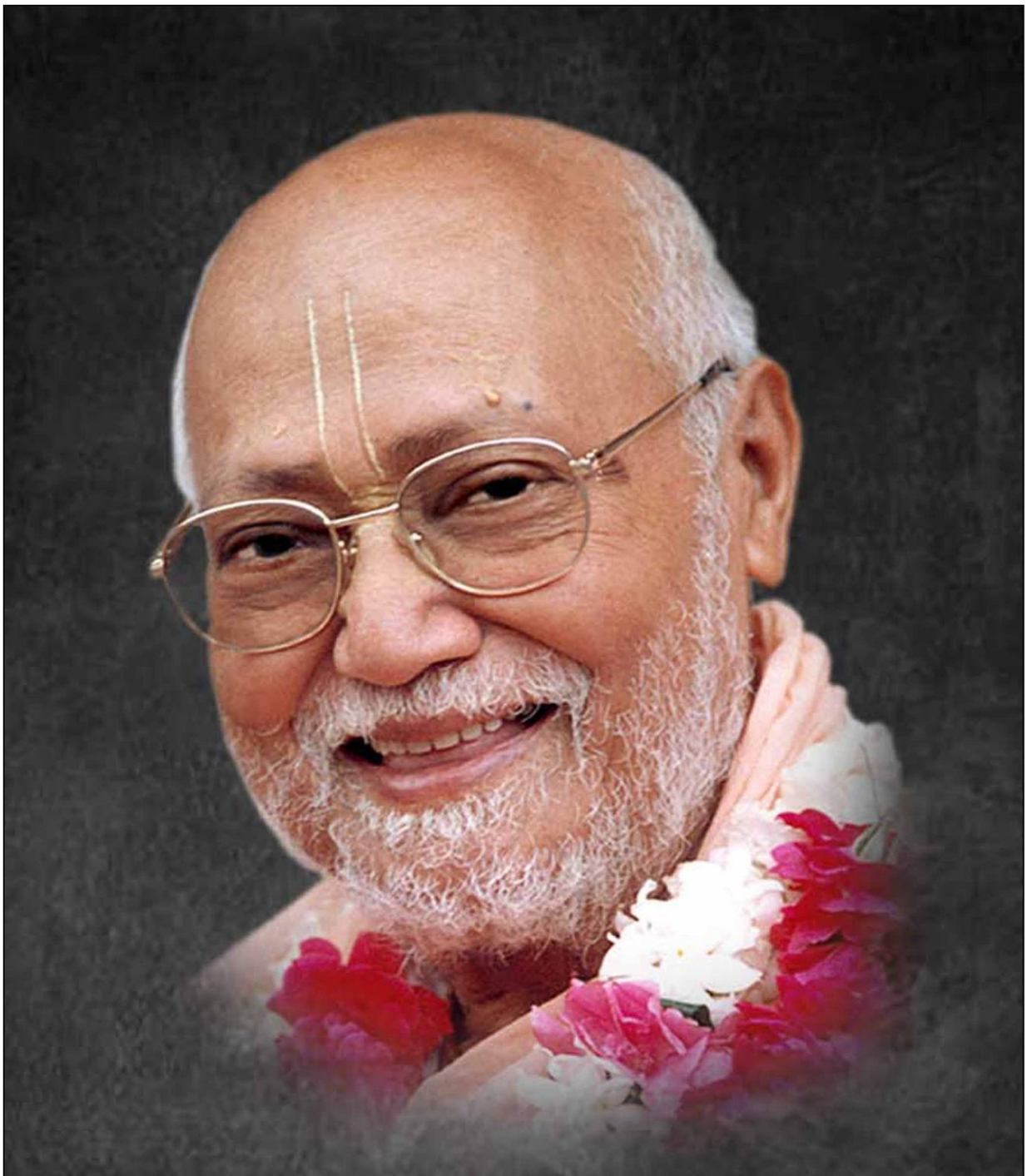

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

# द्वितीय खण्ड

## भाग – 56

16 अप्रैल शुक्रवार से 24 अप्रैल शनिवार तक अमृतसर में अवस्थान

श्रीलगुरुदेव

अमृतसर में लारेन्स रोड पर स्थित लाला साईदास (बिजली पहलवान) जी के श्रीमन्दिर के साथ लगे अतिथि भवन में रहने की व्यवस्था की गयी। वृन्दावन में श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ का जो नौ-चूड़ों वाला सुरम्य मन्दिर है वह इन्हीं बिजली पहलवान ने ही बनवाया था। ठीक उसी प्रकार नौ-चूड़ों वाला मन्दिर उन्होंने अमृतसर के लारेन्स रोड पर भी बनवाया था।

लाला साईं दास जी की इच्छा के अनुसार प्रतिदिन प्रातःकाल और रात्रि के समय श्रीराधा-कृष्ण मन्दिर के सम्मुख श्रील गुरुदेव जी ने श्रीराधाकृष्ण जी की उपासना की सर्वोत्तमता के सम्बन्ध में शास्त्र के प्रमाणों के साथ उपदेश प्रदान किया जिससे उपस्थित श्रोता बड़े सुखी हुए थे। इसके अतिरिक्त लाहोरिया गेट में श्रीसत्यनारायण मन्दिर में, दुर्गियाणा मन्दिर के पास के श्री तुलसीदास जी के मन्दिर में व पण्डित चमनलाल जी द्वारा आयोजित धर्म-सम्मेलन में श्रील गुरुदेव जी ने श्रीमन् महाप्रभु जी की

शिक्षा की विशेषता के सम्बन्ध में भाषण दिये 125 अप्रैल को लाला साईंदास जी से विदा ले कर जब श्रील गुरुदेव जी कोलकाता के लिए रवाना होने लगे तो उस समय लाला जी ने विरह से व्यथित हृदय से एवं नेत्रों से आँसु बहाते हुए कहा - 'अभी जैसे मेरे शरीर की अवस्था है उसके अनुसार मैं दोबारा श्रील गुरुदेव जी के दर्शन कर भी पाऊँगा या नहीं, मुझे सन्देह है।' श्रील गुरुदेव जी ने उनकी सेवा प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रचुर आशीर्वाद दिया। जिन्होंने श्रीचैतन्यवाणी के प्रचार में विशेष

रूप से सहायता की थी उनमें से लाला साईदास जी, डा० हेतराम अग्रवाल, श्री हंसराज भाटिया, श्री मुरारी लाल वासुदेव, श्री तिलकराज अरोड़ा और डा० प्रकाश जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्रील गुरुदेव जी जब 1954 में पहली बार अमृतसर आये थे तो उस समय उन्होंने नमकमण्डी में स्थित बाबा पुरुषोत्तम दास जी के मन्दिर में महीने से अधिक समय तक रहकर विपुल रूप से प्रचार किया था। उस समय नमकमण्डी से दुर्गियाणा मन्दिर तक विराट नगर-संकीर्त्तन शोभायात्रा निकाली

गयी थी। उसके बाद भी कई बार उन्होंने अमृतसर जाकर विपुल रूप से प्रचार किया था। प्रत्येक बार वहाँ के लोगों ने धर्मसभा और नगर-संकीर्त्तन शोभायात्रा में बहुत संख्या में योगदान दिया था। उस समय श्रील गुरुदेव जी के साथ रहते थे- श्रीमद् कृष्ण केशव ब्रह्मचारी श्री ललिताचरण ब्रह्मचारी, श्री कृष्ण बल्लभ ब्रह्मचारी, श्री मदन गोपाल ब्रह्मचारी श्री उपानन्द ब्रह्मचारी श्री विजय कृष्ण ब्रह्मचारी और श्री घनश्याम दास ब्रह्मचारी।

श्रील गुरुदेव जी ने अपने पार्षदों के साथ सन् 1967 में

जालन्धर, होशियारपुर, लुधियाना, जगाधरी, अम्बाला, दिल्ली, देहरादून इत्यादि शहरों में विपुल प्रचार किया था। उस समय श्रीमद् ठाकुर दास ब्रह्मचारी, श्री नरोत्तम ब्रह्मचारी, श्री नारायण ब्रह्मचारी श्री मदन गोपाल ब्रह्मचारी, श्री गोकुलानन्द ब्रह्मचारी, श्री यज्ञेश्वर ब्रह्मचारी, श्री देव प्रसाद ब्रह्मचारी, श्री चिन्मयानन्द ब्रह्मचारी, श्री राधारमण दास ब्रह्मचारी, श्री रणजीत दासाधिकारी और श्री द्विजेन्द्र लाल भौमिक इत्यादि श्रील गुरुदेव जी की प्रचार पार्टी में थे।

12 अप्रैल बुधवार से 17 अप्रैल सोमवार तक जालन्धर में, 18 अप्रैल मंगलवार से 23 अप्रैल रविवार तक होशियारपुर में, 24 अप्रैल सोमवार से 6 मई शनिवार तक लुधियाना में, 7 मई रविवार से 19 मई बुधवार तक जगाधरी में, 11 मई वृहस्पतिवार से 15 मई सोमवार तक अम्बाला में, 16 मई मंगलवार से 29 मई मंगलवार तक दिल्ली में तथा 31 मई बुधवार से 8 जून वृहस्पतिवार तक देहरादून में प्रचार प्रोग्राम हुये। इन स्थानों में से जालन्धर, लुधियाना, दिल्ली

तथा देहरादून में नगरसंकीर्त्तन-शोभायात्राएँ भी निकाली गयी थी।

होशियारपुर में श्रीसच्चिदानन्द आश्रम के प्रतिष्ठाता श्रीमद् हरिबाबा जी के स्नेहपूर्ण एवं सज्जनतापूर्व व्यवहार से श्रील गुरुदेव जी बहुत प्रसन्न हुये थे। आश्रम का वातावरण रमणीय था। श्रील गुरुदेव प्रतिदिन सुबह, दोपहर और साँयकाल-तीनों समय भाषण देते थे। किसी किसी दिन श्रीमद् हरिबाबा जी भी कुछ समय के लिए बोलते थे। एक दिन स्थानीय टाऊनहाल में शिक्षित नागरिकों की सभा में श्रील

गुरुमहाराज जी द्वारा अंग्रेज़ी भाषण को सुनकर लोग और भी प्रभावित हुये थे। लुधियाना में प्रचार के समय श्रील गुरुदेव जी साधुओं के साथ इलाइचीगिरि मन्दिर में ठहरे थे। श्रीमन्दिर में प्रतिदिन प्रातः एवं रात के समय सभा होती थी। एक दिन 30 अप्रैल को स्थानीय सिविल लाईन पर स्थित दण्डीस्वामी जी के आश्रम के सदस्यों द्वारा आमन्त्रित करने पर श्रील गुरुदेव जी ने सहस्त्र - सहस्त्र नर-नारियों की विशाल जनसभा में कृष्णप्रेम-धर्म की सर्वोत्कर्षता प्रतिपादक भाषण प्रदान किया था। लुधियाना

के श्री नरेन्द्रनाथ कपूर, 'भक्तिविलास' और श्री कृष्ण लाल बजाज दोनों ने श्रीचैतन्य वाणी के प्रचार में मुख्य रूप से सहयोग दिया था।

जगाधरी के श्रीसत्यनारायण मन्दिर में धर्म सभा का अनुष्ठान हुआ। जगाधरी से 25 मील दूर यमुना के किनारे हतनि कुण्ड में एक विराट सन्त-महासम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। इस सम्मेलन में उद्घाटन के लिये आमन्त्रित करने पर श्रील गुरुदेव जी ने अपने पार्षदों के साथ वहाँ शुभपदार्पण किया। ऋषिकेश के श्री व्यास जी को इस

सभा का सभापति बनाया गया था। हरिद्वार के निरन्जनी अखाड़े के श्रीप्रकाशानन्द जी, जोशी मठ के श्री शंकराचार्य जी और स्वामी श्रीभवानन्द जी भी वहाँ उपस्थित थे। श्रील गुरुदेव जी ने अपने भाषण में मायावाद का खण्डन करते हुये शुद्धभक्ति सिद्धान्त की स्थापना की थी। सभापति महोदय ने गुरुदेव जी के अभिभाषण की खूब ही प्रशंसा की थी । अम्बाला में श्रील गुरुदेव जी पार्षदों के साथ सन्त निवास में रहे थे। सनातन धर्मसभा के श्रीगीता भवन में धर्मसभा का अनुष्ठान किया गया। गीता भवन के

अतिरिक्त सन्तनिवास के सुधा व्यास मन्दिर में व उच्चमाध्यमिक बालिका विद्यालय में भी श्रील गुरुदेव जी ने भाषण दिये। मेजर जनरल शमशेर सिहँ जी, हरगु लाल एण्ड सन्स इन्जीनियरिंग कम्पनी के मालिक श्री नन्दकिशोर जी, सी० ई०, डा० कपूर इत्यादि बहुत से विशिष्ट व्यक्ति प्रतिदिन हरिकथा श्रवण करने आते थे। श्री नन्द किशोर जी ने श्रील गुरुदेव जी के सुयुक्तिपूर्ण ज्ञानगर्भित भाषण सुनकर भरी सभा में खड़े होकर बड़े आवेश से सभी के सामने ही कहा कि ऐसी मूल्यवान कथा मैंने

अपने जीवन में पहली बार सुनी है। मेरा मस्तक कभी भी किसी के सामने नहीं झुका। परन्तु इन साधुओं के चरणों में मेरा मस्तक पहली बार और बरबस ही झुका है।

दिल्ली में श्रील गुरुदेव अपने पार्षदों के साथ 30 डी, कमलानगर में स्थित अतिथि भवन में ठहरे थे। दिल्ली और नई दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर श्रील गुरु महाराज जी का प्रचार कार्यक्रम हुआ। कमलानगर में स्थित श्रीराधाकृष्ण मन्दिर में 26 मई से 28 मई तक तीन दिन का विराट सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में विभिन्न मठों

के आचार्य और स्वामी जी गणों ने योगदान दिया था। श्रील गुरुदेव जी ने अपने प्रातःकालीन अभिभाषण में श्रीमन्महाप्रभु जी के असमोर्द्ध्व अवदान के वैशिष्ट्य के ऊपर अच्छी तरह प्रकाश डाला। यहाँ श्री प्रह्लाद राय गोयल जी श्रीचैतन्यवाणी के प्रचार में मुख्य रूप से यत्न करने के कारण श्रील गुरुदेव जी के आशीर्वादभाजन हुये थे।

**देहरादून** : देहरादून में पीपल मण्डी में स्थित गीता भवन में स्थानीय श्रीगोपालनाथ मन्दिर में श्री पंचायती मन्दिर, Tagore

Cultural Society एवं अवकाश प्राप्त C.O.P.S. मि० जी० एस० माथुर के निवास स्थान पर एवं शहर के विभिन्न स्थानों में शुभ पदार्पण करते हुये श्रील गुरुदेव जी ने भाषण दिये थे।

1968 में पंजाब में जालन्धर, अमृतसर, गुरदासपुर, बटाला और लुधियाना इत्यादि विभिन्न स्थानों में अपने पार्षदों के साथ शुभपर्दापण करके श्रील गुरुदेव जी ने बहुत प्रचार किया। उस समय पूज्यपाद श्रीमद् ठाकुर दास ब्रह्मचारी, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रसाद आश्रम महाराज, श्री

मंगल निलय ब्रह्मचारी, श्री नारायणदास ब्रह्मचारी, श्रीअचिन्त्य गोविन्द ब्रह्मचारी, श्री मदन गोपाल ब्रह्मचारी, श्रीपरेशानुभव ब्रह्मचारी और श्री देवप्रसाद ब्रह्मचारी श्रील गुरुदेव जी के साथ थे।

**जालन्धर** : 2 अप्रैल 1968 मंगलवार से 14 अप्रैल 1968 रविवार तक शहर के विभिन्न स्थानों में जो प्रचार कार्यक्रम हुआ उनमें से वहाँ के देशभक्त मेमोरियल हाल में एवं सिविल लाईन पर स्थित टण्डन हाल में, पाँच धर्म-सभाओं में उच्चशिक्षित असंख्य लोगों की उपस्थिति के बीच श्रील

गुरुदेव जी ने 'भगवद्तत्व', 'श्रीहरिनाम महात्म्य' और 'श्रीविग्रह सेवा' के तात्पर्य के सम्बन्ध में भाषण दिये थे। देश भक्त मेमोरियल हाल में पंजाब के खाद्य एवं स्वास्थ्य मंत्री, महन्त राम प्रकाश जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया था 17 अप्रैल रविवार को जालन्धर शहर में विशाल नगर-संकीर्तन-शोभायात्रा निकाली गयी थी।

**अमृतसर** : 15 अप्रैल सोमवार से 21 अप्रैल रविवार तक अवस्थान करते हुये श्रील गुरुदेव जी ने लारेन्स रोड पर स्थित लाला

साईंदास जी (बिजली पहलवान) के मन्दिर में प्रतिदिन रात्रि को, नमक मण्डी में स्थित बाबा श्री पुरुषोत्तम दास जी के मन्दिर में प्रतिदिन प्रातः के समय एवं दुर्गियाणा मन्दिर में श्री तुलसी दास जी के मन्दिर में असंख्य नरनारियों के समावेश में हरिकथामृत का परिवेशन किया था।

**गुरदासपुर** : 22 अप्रैल सोमवार से 28 अप्रैल रविवार तक अवस्थान करते हुये श्रीचैतन्यवाणी के प्रचार में श्रील गुरुदेव जी के चरणाश्रित शिष्य श्रीमनमोहन अग्रवाल, एम० ए० आई० पी०

एस० एवं उनके पिता श्री हंसराज अग्रवाल जी धन से सेवा कर श्रील गुरुदेव जी के प्रचुर आशीर्वाद के भाजन हुये थे।

**बटाला** : 29 अप्रैल सोमवार से 2 मई वृहस्पतिवार तक एवं 3 मई शुक्रवार से 5 मई रविवार तक रह कर श्रील गुरुदेव जी ने श्रीचैतन्यवाणी का बहुत प्रचार किया।

श्रीलगुरुदेव